एपिसोड –48
(भविष्य की ऊर्जा)
(Energy for the Future)

मुख्य शोध एवं आलेख : डॉ० मानस प्रातिम दास
हिन्दी अनुवाद : सविता यादव

(लोकल ट्रेन आने का समय....ज्यादातर यात्री कार्यालय समय के बाद घर लौटने वाले यात्री... असिम (55 वर्ष) और नाजिम (40 वर्ष) के बीच चर्चा हो रही है ।

असिम : प्लीज थोड़ा उधर खिसकेंगे । मैं बैठ नहीं पा रहा हूँ ।

सहयात्री : कहाँ जगह देख रहे हैं । मेरे लिए ही जगह नहीं ।

असिम : जगह तो काफी है, परंतु आप सरकना नहीं चाहते हैं ।

सहयात्री-2 : साहब, आपको तो टैक्सी लेनी चाहिए थी । आपके लिए ट्रेन ठीक नहीं ।

असिम : मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं है । आप शांत रहें ।

सह यात्री : अपना मुँह बन्द रखते हो या नहीं । जंगली कहाँ का ।

असिम : क्या कह रहे हो ? फिर से कहना – ऐसा मारूँगा....सारी बत्तीसी बाहर आ जायेगी ।

(भीड़ से कुछ लोग बोलने लगते हैं....जानते नहीं मैं कौन हूँ? ट्रेन से नीचे उतरना...सारी हेकड़ी निकाल दूँगा ।... दूसरी तरफ नासिम का स्वर उभरता है)

नाजिम : हे...असीम दादा....ये क्या हो रहा है ? यहाँ चले आओ...बहुत जगह है । पंखे की हवा भी आ रही है । (असीम...अपनी सीट छोड़ता है और चल देता है । सह-यात्री.....आखिर कुछ शांति हुई.....असीम भी नाजिम के पास जाकर बैठ जाता है)

असिम : हम दोनों इस सीट पर बैठ जाते हैं...ठीक है नाजिम...

नाजिम : ठीक है दादा...आप चिन्ता न करें....सारा दिन कैश काउंटर पर बैठा ही था
। मेरे लिए खड़ा रहना ठीक रहेगा ।

असिम : नाजिम भाई, बहुत समय से मुलाकात नहीं हुई । कहाँ थे ?

नाजिम : मेरे विचार में पूरे तीन साल हो गए । इस दौरान मेरा स्थानांतरण, उत्तर
प्रदेश में हो गया था ।

असिम : अच्छा...ये बात है... । किसी ने आपके बारे में बताया ही नहीं । मुझे ये
पता था कि तुम्हारा स्थानांतरण हो गया है, पर कहाँ ये नहीं पता चला
।

नाजिम : (हँसते हुए) हाँ.... कुछ समय तक तो मुझे भी यही लगा । उच्च अधिकारियों का मकसद क्या रहा....पता नहीं चला....हो सकता है, मुझे ट्रांसफर के नाम पर सजा दी गई हो ।

असिम : नहीं.....नहीं...ऐसा नहीं । तुम परिश्रमी और निष्ठावान हो । आखिर वो
ऐसा क्यों करेंगे । संस्था के लिए तुम एक हीरा हो (हँसता है) ।

नाजिम : ये तुम्हारा प्यार है । अच्छा ये बताओ बरशा क्या कर रही है ?

असिम : वह अंग्रेजी में स्नातकोत्तर कर रही है । तुम्हारे बारे में पूछती रहती है । तुम्हें ध्यान है उस पिकनिक का, जो पाँच साल पहले, हम घूमने के लिए गए थे ।

नाजिम : (आश्चर्य से) तुम्हें याद है । आजकल मैं काम की अधिकता के कारण अभ्यास ही नहीं कर पाता हूँ ।

असिम : मैं समझ सकता हूँ । आपकी माताजी कैसी हैं ?

नाजिम : उनका देहान्त हो गया है । मैं उस समय बाहर था ।

असिम : ओह ! बड़े दुःख की बात ! भगवान आपको शक्ति दे ।
.... (ट्रेन में सामान बेचने वाला:- जादू की घड़ी... मन चाही रोशनी....जितनी चाहो रोशनी...मात्र 20 रुपए ...असिम उसको पुकारता है)

असिम : प्लीज....दिखाएंगे.....

हॉकर : अच्छा सर....ये लो । मात्र 20 रुपए में.....

असिम : ओ.के....ये ठीक है । परंतु, इसमें जादू की क्या बात है ?

हॉकर : देखो सर, कितनी सुंदर है ? इसमें ऊर्जा के तीन स्त्रोत हैं ।

नाजिम : एक नहीं....तीन....तीन विचित्र बात !

हॉकर : सर । इसीलिए तो मैं कह रहा हूँ । यह देखो...ये रही बैटरी...स्विच दबाओ....रोशनी ऑन ।

नाजिम : ये तो ठीक है....मुझे भी दिख रहा है । और बाकी के दो !

हॉकर : सौर ऊर्जा सर, सौर ऊर्जा । आपने TV के विज्ञापनों को तो देखा ही होगा । यदि हम, सौर ऊर्जा को नहीं अपनाते हैं तो प्रगति की राह में पिछड़ जाएँगे ।

असिम : अच्छा....इसमें सौर ऊर्जा कैसे आएगी....दूसरा उसका भंडारण कैसे हो पायेगा ?

हॉकर : देखो सर ! ये सबसे ऊपर छोटा सा सोलर पैनल लगा हुआ है । आपको इसे कुछ घंटों के लिए, सूर्य की रोशनी में रखना होगा । बस, सोलर ऊर्जा हाजिर (हँसता है) । सर, भंडारण कैसे होगा, उसके बारे में मुझे जानकारी नहीं है । मुझे तो कम्पनी, मेरा कमीशन देती है ।

असिम : ठीक है । मुझे, ये सवाल नहीं करना चाहिए था । परन्तु ये तो पता ही होगा कि, ये सब जानकारियाँ हमें कहाँ से मिल सकती हैं ?

हॉकर : सर ! इस पर एक फोन नंबर दिया हुआ है । आप फोन करके और अधिक
जानकारी ले सकते हैं ।

असिम : ठीक है, वो तो हम कर लेंगे । अच्छा ये बताओ, तीसरा स्त्रोत क्या है ?

हॉकर : सर...आपने ये छोटा सा पहिया देखा होगा.....

असिम : पर, मैं तो इसे शो-पीस समझ रहा था ।

हॉकर : नहीं सर ! जब आप, इस डोरी को खींचकर छोड़ते हैं तो, ऊर्जा पैदा होती
है और ये बल्ब जल जाता है ।

नाजिम : इसमें एक ऊर्जा स्त्रोत से दूसरे पर जाया जा सकता है ।

असिम : यानी ऊर्जा के तीन रूप । रसायन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और यांत्रिकी ऊर्जा....
हुआ ना जादू (हँसता है) । तुम्हारा क्या ख्याल है ? खरीदा जाये !
(हॉकर दूसरे यात्रियों का ध्यान आकर्षित करता है । तेज आवाज में वह अपनी बात कहता है ।)

नाजिम : मेरे विचार में, एक तो खरीद ही लो । बीस रूपये कोई बड़ी बात नहीं है ।
आखिर एक जादू की घड़ी जो ले रहे हो (हँसते हुए) ।

असिम : ठीक है.... तुम्हारे साथ जाता हूँ, अरे जादूगर भाई....इधर आओ । मुझे
एक लाइट दे दो ।

हॉकर : सर ! ये आपको और कहीं नहीं मिलेगी । मेरी बात याद रखना...
..... (हॉकर पैसा लेता है और चला जाता है) ....

असिम : इसकी डिजाइन तो देखो । क्या मास्टर पीस है ? उसे भी नहीं पता, वह
ग्राहकों को अल्लादीन का चिराग दे रहा है (हँसता है) ।

नाजिम : काश ! मेरे पोस्टिंग के दौरान ऐसा लैम्प मेरे पास होता ।

असिम : क्या वहाँ बिजली नहीं थी ?

नाजिम : असिम भाई ऐसी बात नहीं है । बिजली के खम्बे लगे हुए हैं । घरों में तार

डाले जा चुके हैं । परन्तु पावर नदारद है ।

असिम : मैं कुछ समझा नहीं । समस्या फिर कहाँ है ?

नाजिम : एक ऐसा गाँव, जो पावर ग्रीड से खाली कागजों में जुड़ा हुआ है । परन्तु बिजली कभी नहीं आती है ।

असिम : फिर तो तुम्हें बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ा होगा !

नाजिम : इस दौरान मेरे ट्रान्जिस्टर ने मेरे दोस्त की भूमिका निभाई । रोशनी करने के लिए कैरोसीन तेल काम में लेना पड़ता था । ऐसी रोशनी में काम करना....राम रे राम.....

असिम : यानी रेडियो के अलावा मनोरंजन का कोई साधन नहीं । TV तो हो ही नहीं सकता ।

नाजिम : रेडियो ही मेरा एक मात्र दोस्त था । मैं ज्यादातर सभी कार्यक्रमों को सुनता था । संगीत, फिल्मी गाने, बच्चों का कार्यक्रम और यहाँ तक कि - विज्ञान के कार्यक्रम भी.....

असिम : क्या बात है ? महानगरों में तो लोगों ने रेडियो सुनना ही बन्द कर दिया है । ये सब TV के कारण हुआ है ।

नाजिम : असिम भाई जानते हो ! मुझे ऊर्जा पर दी गई एक वार्ता अब भी याद है ।

(फ्लैश बैक में झाँकते हुए: - रेडियो सेट की ध्वनि - एक महिला के स्वर में विज्ञान वार्ता का प्रसारण)

गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोत, कभी न समाप्त होने वाले ऊर्जा के भण्डार हैं । इसके अन्तर्गत एक नहीं, अनेकों ऊर्जा के स्वरूपों को, ले सकते हैं । इनमें मुख्य हैं । पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, जल, जैविक और जियोथर्मल ऊर्जा । जैविक ऊर्जा, कृषि उत्पादों से, पशुओं के गोबर व मलमूत्र से तथा घास-फूस से तैयार की जाती है । जियोथर्मल ऊर्जा, पृथ्वी के गर्भ से निकलने वाली ऊर्जा का स्वरूप है - जैसे कि गरम पानी के झरने आदि....धीरे-धीरे - आवाज मंदी पड़ जाती है ।

नाजिम : कभी-कभी जब मैं, सड़क की रोशनी (स्ट्रीट लाइट) की ओर देखता हूँ तो पाता हूँ कि क्या हम टिकाऊ विकास का अभिप्राय समझते हैं ।

असिम : (हँसते हुए) तुम्हारे ट्रांसफर ने तो बदल ही दिया है । ये तो मैं स्पष्ट देख रहा हूँ । मुझे भी परिवर्तन पसन्द है, परन्तु मेरा स्टेशन जो आ रहा है । अब तो उतरना ही पड़ेगा – परन्तु आगे कभी, गाँव के अनुभवों को जानना चाहूँगा ।

नाजिम : क्या.. नहीं दादा....मैं किसी दिन फोन करके तुम्हारे घर पहुंचता हूँ ।

असिम : मुझे अति खुशी होगी (दोनों हँसते हैं)

(दृश्य परिवर्तन: – नाजिम और बैंक प्रबन्धक के बीच चर्चा)

नाजिम : रवि, कह रहा था कि प्रबन्धक साहब मिलना चाह रहे हैं । मैडम...क्या मेरे से कोई गलती हुई है ।

रीटा : नाजिम सब ठीक है । ऐसा क्यों सोचते हो ? सभी जानते हैं आप कितने अच्छे हो ।बात कुछ और ही है । मैं, तुम्हें कुछ जिम्मेदारियाँ देना चाहती हूँ । आप उन्हें बखूबी निभा सकते हो ।

नाजिम : मेरे लिए ये गर्व की बात है । परन्तु, दूसरी तरफ कुछ डर भी है । अच्छा क्या है वो जिम्मेदारियाँ ?

रीटा : कुछ लोगों ने स्वरोजगार के लिए प्रार्थना पत्र दिये हैं । वो गैर-पारम्परिक और सतत ऊर्जा के क्षेत्र में काम करना चाहते हैं । लोन देना हमारा कर्तव्य भी है और फर्ज भी । परन्तु ये हमारे लिए नया क्षेत्र है ।

नाजिम : वोह ! क्या बात है । उनके प्रार्थना पत्र में कोई कमी है ।

रीटा : नाजिम ऐसा नहीं है । कुछ और ही कहानी है । तुम उसे समझो और सुझाव दो क्या किया जाए ? क्या वो इस क्षेत्र में सफल हो पाएंगे !

नाजिम : अच्छा...मुझे करना क्या है ?

रीटा : कुछ खास नहीं । आप उनसे मिलकर जानने का प्रयास करें । मेरे विचार में, ये नया फील्ड होने के कारण इसमें अपार समभावनायें हैं । आगे चलकर और लोग भी लोन के लिए आ सकते हैं ।

नाजिम : मेरी यहाँ पर, पहली परीक्षा (दोनों हँसते हैं)

रीटा : तुम्हारे लिए यह अतिरिक्त भार है । परन्तु मैं नहीं चाहती हमारे बैंक पर,
आगे चलकर बैड लोन का भार पड़े ।

नाजिम : मुझे समभावनायें तलाशनी हैं ।

रीटा : सही कहा । मैं आज ही कार्यालय आदेश निकालती हूँ, परन्तु उसमें, तुम्हें प्रधान-कार्यालय में जाने का आदेश होगा ।

नाजिम : मैं समझा..... मुझे ऊर्जा-क्षेत्र में उभर रही संभावनाओं को तलाशना है ।

रीटा : मेरी शुभकामनायें तुम्हारे साथ हैं ।

नाजिम : धन्यवाद मैडम !

(नाजिम- प्रबन्धक के चैंबर से बाहर आता है । श्रोता उसे सुंदर बन में पाते हैं, जहां पर वह लोगों से और उद्यमियों से चर्चा कर रहा है ।)

नाजिम : संजीब दादा, लगता है, तुम्हें कई असफल प्रयासों से जूझना पड़ा है । नये
उद्यमियों की यही कहानी है ।

संजीब : मैं उन्हें असफल प्रयास नहीं कह सकता । देखो, हर प्रयास में कुछ सीखने
को मिलता है । यदि आपको सफल होना है तो बहुत कुछ सीखना और जानना पड़ेगा । जिन उद्यमों की मैंने चर्चा की है, वो मेरे लिए नया सीखने के रूप में थे ।

नाजिम : हमारे बैंक का मानना है कि आगे चलकर इस क्षेत्र में कई नये उद्यमी आयेंगे । लोन भी वो लेना चाहेंगे ।

संजीब : यह स्वाभाविक है । ल-वायु में हो रहे बदलावों से लड़ने के लिए, सतत ऊर्जा ही एक प्रयास बचता है ।

नाजिम : जानकार लोग यही कहते हैं । परन्तु मेरा सवाल है तुम्हें गावों में आकर काम करने की क्या जरूरत पड़ी । शहरों में तो और भी अधिक संभावना हो सकती थी ।

संजीब : पहले मुझे स्पष्ट करने दो । संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट कहती है कि.....

नाजिम : मेरे विचार में हम कहीं बैठकर, किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं । क्यों नहीं, उस चाय की थड़ी पर चला जाए ?

संजीब : वो ठीक रहेगा । तुम्हें खुशी होगी कि ये चाय वाला मेरे नये प्रोपोजल से बहुत खुश है ।

नाजिम : वो तो ठीक है । फिर तो उसकी चाय जरूर पीनी चाहिए (दोनों हँसते हैं)

संजीब : बिलाल भाई, दो कप चाय । वो स्पेशल वाली और हाँ चीनी कम...

नाजिम : इधर बैठिए । आखिर बादलों ने हमारा पूरा ख्याल रखा है । वो भी चाहते हैं..... निर्विघ्न हमारी चर्चा जारी रहे ।

संजीब : आपके बात करने का ढंग भी बहुत अच्छा है । ……. I Like IT……...

नाजिम : धन्यवाद ! अच्छा, मुझे अपने प्लान के बारे में समझाओ । मैं कुछ सीखना चाहता हूँ ।

संजीब : आप भी अच्छा मजाक कर लेते हो ।

नाजिम : नहीं...ऐसी बात नहीं है । मुझे यहाँ पर, ये सब, जानने समझने के लिए भेजा गया है ।

संजीब : देखो - भारत गावों का देश है । यहाँ 70% जनसंख्या गाँवों में रहती है । इस प्रकार, हमारे देश का विकास और प्रगति गाँवों से जुड़ी हुई है ।

नाजिम : मैं इससे सहमत नहीं हूँ ।

संजीब : हमारी केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के प्रयासों के बाद भी गाँवों का

वांछित विद्युतीकरण नहीं हो पाया है । विश्व परिदृश्य में हम अभी, बहुत पीछे हैं ।

नाजिम : ये तुम्हारी बात ठीक है ।

संजीब : देखो, हमारे आंकलन में कुछ कमियाँ हो सकती हैं । पहले इसका आंकलन गाँवों को विद्युत लाइन के साथ जोड़कर देखा जाता था । कितने घरों में बिजली लाई गई है, इसका कोई ख्याल नहीं था ?

नाजिम : इसमें क्या गलत है !

संजीब : मैं आपको बताता हूँ । इसमें कोई ख्याल नहीं रखा जाता था कि कितने घरों में बिजली पहुंची है ।

नाजिम : अब मैं समझा तुम्हारी बात में..दम है, (हँसता है)

संजीब : हमारे देश में बिजली की लाइन यदि गाँव में पहुँच गई तो मान लेते थे कि वहाँ विद्युतीकरण हो गया है । इस प्रकार 94.5% गाँवों में बिजली तो पहुंची, परंतु कितने घरों में, ये कोई नहीं जानता था ?

नाजिम : परन्तु आपने भी तो अपने गाँव में यही देखा है ।

संजीब : हाँ...यही बात है । दूर-दराज के क्षेत्रों में और छोटी-छोटी दाणियों में जहां बिजली की लाइनें नहीं पहुँची हैं वहाँ पर नवीनीकरण और गैर-पारंपरिक ऊर्जा साधनों का सहारा लिया गया है ।

नाजिम : आपने अच्छी बात कही है । परन्तु ये बदलाव कितना हो पाया है । कितना उपयोग सौर-ऊर्जा, गोबर-गैस और लघु जल-संयत्रों का हो रहा है, अभी कहना मुश्किल है ।

संजीब : मैं आपकी सराहना करता हूँ । नई एवं नवीनीकरण ऊर्जा मंत्रालय इस दिशा में प्रयासरत है । इस मंत्रालय ने कई नये कदम उठाए हैं । राज्य सरकारें और दूसरी संस्थायें भी इस और काम कर रही हैं ।

नाजिम : वो तो सब ठीक है.....परन्तु.....

संजीब : (हँसते हुए) ....परन्तु....बिलाल भाई चाय जो ले आया । दादा...मेरे बिस्कुट कहाँ हैं ?

बिलाल : मैंने सोचा...ये शहरी बाबू, उन्हें पसंद नहीं करेगा ।

नाजिम : मेरे भाई, मुझे कोई खराब नहीं लगेगा । परन्तु मुझे अपने बिस्कुट से दूर मत रखो (हँसता है) ।

बिलाल : बाबू...ये रहे आपके बिस्कुट...अभी लाता हूँ ।
(बिलाल बिस्कुट लाता है)

बिलाल : बिस्कुट बाबू...ये दो पैकेट .....

नाजिम : धन्यवाद दादा.....

संजीब : बिलाल का घर यहाँ से थोड़ी दूरी पर ही है । कुछ दिन पहले ही उसने बिजली का कनैक्शन लिया है ।

नाजिम : क्या बात है ? सुनकर अच्छा लगा ।

संजीब : सबसे अच्छी बात है कि यहाँ का पावर-ग्रीड एक मिनी-पावर ग्रीड है जो कि सौर-ऊर्जा आधारित है । एक NGO के सहयोग से ये सारा काम किया गया है ।

नाजिम : इस प्रकार के कामों को आगे बढ़ाने के लिए हमें कॉर्पोरेट क्षेत्र की भी मदद लेनी चाहिए । क्या ख्याल है ?

संजीब : इसमें कोई सन्देह नहीं । नई परिस्थितियाँ बताती हैं कि वर्तमान ऑफ-लाइन-ग्रीड ऊर्जा आपूर्ति का दायरा बढ़ रहा है । प्राइवेट कम्पनियाँ भी इस क्षेत्र में नई भूमिका तलाश रही हैं ।

नाजिम : वाह ! क्या बात है ?

संजीब : दो राज्य सरकारों ने इस दिशा में अच्छा काम किया है ।

नाजिम : मेरे विचार में एक है पश्चिम बंगाल (हँसता है)

संजीब : आपने ठीक कहा है । और दूसरा राज्य है छत्तीसगढ़ । भारत में लघु-सोलर ग्रीड का विचार सन 1990 में पश्चिम बंगाल में सुन्दर बन क्षेत्र के लिए आया था । और छत्तीसगढ़ के दूर-दराज जंगलों में निवास करने वाले लोगों के लिए सुझाया गया । उस समय यह मध्य प्रदेश का ही भाग था ।

नाजिम : परन्तु वो सभी सरकारी संस्थायें थी । प्राइवेट सैक्टर के बारे में क्या कहना है ? हांलाकि मैं अपने सवाल को दोहरा रहा हूँ ....परन्तु मेरे लिए जानना जरूरी है ।

संजीब : कई अच्छे उदाहरण गिनाये जा सकते हैं । कई राज्यों में, वो लघु-विद्युत केंद्र स्थापित कर रहे हैं । जहां पर बिजली पहुँचाना मुश्किल है, उन गांवों में, प्राइवेट कम्पनियाँ काम कर रही हैं । बिहार की एक कंपनी ने, 300 गाँवों में, विद्युत आपूर्ति का काम किया है । इस कंपनी ने सन 2007 से अब तक छोटे-छोटे 80 लघु विद्युत केंद्र स्थापित किए हैं और लगभग दो लाख लोगों को लाभ पहुंचाया है ।

नाजिम : सराहनीय काम ....

संजीब : और भी कई उदाहरण हैं । कर्नाटक में भी सेलको नामक कंपनी सौर ऊर्जा पर काम कर रही है । यह कंपनी अपनी खास प्रकार की तकनीकी से गाँवों में सोलर-पावर द्वारा घरों को रोशन कर रही है ।

नाजिम : आपका क्या मानना है, भविष्य में और नये उद्यमी सामने आयेंगे ।

संजीब : मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है । मेरे कंपनी की योजना, सुन्दरबन क्षेत्र में पाँच लघु-इकाईयाँ नवीनीकरण ऊर्जा के क्षेत्र में लगाने की है ।

नाजिम : पाँच क्यों ? इससे खर्च नहीं बढ़ेगा !

संजीब : शुरू में ऐसा होगा । यदि आप एक ही स्त्रोत जैसे कि सौर-ऊर्जा या फिर पवन ऊर्जा में काम करते हैं तो, अनियमित ऊर्जा उपलब्धता के कारण यह सम्भव है । बादलों के कारण कभी सौर-ऊर्जा उत्पन्न नहीं होगी तो वहीं दूसरी और हवा के बैग नहीं होने के कारण, पवन ऊर्जा नहीं बन पायेगी ।

नाजिम : मैं समझ सकता हूँ - संजीब ।

संजीब : तुम्हारे लिए मेरे पास कुछ नया है.... I mean a new surprise !

नाजिम : क्या है....कोई बड़ा आयोजन ...

संजीब : बड़ा कार्यक्रम नहीं...एक सामान्य सा गाँव का कार्यक्रम । कुछ संगीत और
एक-दो लघु-नाटिकायें ।

नाजिम : ये तो ठीक है....परन्तु इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

संजीब : सारी रोशनी का प्रबंध....नवीनीकरण ऊर्जा स्त्रोतों से जो है ।
ना ही डीजल की खपत और ना ही कोई प्रदूषण ।

नाजिम : अच्छा.....

संजीब : जो नाटक दिखाया जायेगा वो भी लोकल किवदन्ती पर आधारित होगा ।
परन्तु संदेश स्पष्ट होगा । नवीनीकरण ऊर्जा और पर्यावरण सुरक्षा ।

नाजिम : फिर तो मैं जरूर देखूंगा । गेस्ट हाउस में सूचना दे देता हूँ, देरी से आऊँगा ।

...दृश्य परिवर्तन....गाँव का दृश्य ... फोक संगीत ...
..... तालियाँ आदि .....

नाजिम : मजा आ गया । सुंदर प्रस्तुति । उस छोटी सी लड़की का तो कहना ही क्या Talented Girl..

संजीब : उसका चयन, जिला स्तर पर ड्रामा प्रतियोगिता में हुआ है ।

नाजिम : सुंदर...वो इसके लिए हकदार है ।

संजीब : नवीनीकरण ऊर्जा के इस्तेमाल पर दिया गया सन्देश भी एकदम स्पष्ट था ।

नाजिम : संजीब उधर देखो ! आसमान की ओर....वो नीली रेखायें । मैंने कभी शहर
में इस प्रकार चमकते हुए सितारे नहीं देखे हैं । इस आसमान के नीचे खड़ा होकर निहारना, अलग ही अनुभूति देता है । प्रधान कलाकार का

सन्देश भी कुछ इसी प्रकार की अनुभूति दे रहा था....यदि हमारी धरती साफ-सुथरी होगी तो हमारा जीवन भी सुंदर होगा ।

संजीब : आप तो भावुक हो गए । एक बैंक कर्मी से इस प्रकार...?

नाजिम : संजीब, मुझे अपने दायित्व का ख्याल है । मुझे लौटकर अपनी रिपोर्ट भी प्रस्तुत करनी है । परंतु आखिरकार मैं भी एक इंसान हूँ । मेरा भी सपना है, साफ-सुथरा पर्यावरण औरटिकाऊ विकास...क्या संजीब, ये सब सम्भव बन पायेगा ?

संजीब : मैं तो थोड़े में यही कहूँगा कि - अद्‌भुत ! परंतु ये भी स्पष्ट है कि, एक..... दो, इस प्रकार की परियोजना से सुंदरबन क्षेत्र की कायाकल्प नहीं होने वाली है ।

नाजिम : परन्तु मुझे आशा है कि बदलाव आयेगा । आपने उस यूरोपियन लड़की की कहानी तो सुनी ही होगी, जिसने ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध लड़ाई शुरू की थी ।

संजीब : हाँ...मैंने उसके बारे मैं पढ़ा है । परंतु जब तक सारा संसार चेतेगा नहीं,

तब तक बात बनने वाली नहीं ।

नाजिम : हमें इस प्रकार की तकनीकी में पैसा लगाना ही होगा, जिससे हम प्रदूषण से बच सकें । शहरों में सार्वजनिक यातायात के साधनों पर जोर देना होगा । स्थानीय नवीनीकरण ऊर्जा अपनानी होगी और फॉसिल-फ्यूल को त्यागना होगा । उद्योग-धंधों में कम ऊर्जा खपत करने वाली तकनीकी को बढ़ावा देना होगा ।

संजीब : मैं कुछ समझा नहीं । क्या सच में बैंक की तरफ से कुछ जांकारियाँ लेने आए हैं ये फिर आप कोई पर्यावरण एक्टिविस्ट हैं (हँसता है)

*.....**दोनों जोर से हँसते हैं**.....*

संजीब : सर आप ठीक तो हैं ।

नाजिम : संजीब आपको पता नहीं होगा । मेरा पैतृक गाँव, उत्तरी बंगाल में पड़ता है

। वहाँ पिछले दो सालों से लगातार बाढ़ आ रही है । इस बार पता चला कि मेरे बचपन के दोस्त शंकर के पाँच साल के बेटे की बाढ़ में बहने से मौत हो गई ।

संजीब : बड़े दुःख की बात है....सर !

नाजिम : जब मैं पढ़ता हूँ कि ये सब बिना सोचे समझे जंगलों के कटाव और जीवाश्म ईंधन के कारण हो रहा है तो कहीं ना कहीं हम, अपने आपको अपराधी पाते हैं । मैं सोचता हूँ कि हम सब मिलकर इस पर्यावरण के लिए और अच्छा कर सकते हैं ।

संजीब : काश ! इस प्रकार हम सोचना शुरू कर दें । परंतु काफी देर हो रही है आपको गेस्ट-हाउस में भी लौटना है ।

नाजिम : आप ठीक कह रहे हैं । परंतु संजीब, आप मेरी शुभकामनायें नाटक के कलाकारों और निर्देशक को अवश्य ही पहुंचा देना । मुझ जैसे व्यक्ति में, उन्होनें एक नई सोच को जन्म दिया है ।

संजीब : मैं आपकी भावनायें, अवश्य उन तक पहुँचा दूँगा...अब चलें...शुभरात्रि ।

नाजिम : Good Night ……. Have a Nice Time……

….. समापन संगीत …………

,,,